इकाई 2 प्रारम्भिक आधुनिकता : तोकुगावा काल 1600-1868

इकाई की रूपरेखा

2.0 उद्देश्य

2.1 प्रस्तावना

2.2 तोकुगावा दाइम्यो-हान प्रणाली

2.2.1 दाइम्यों की श्रेणियाँ

2.2.2 वैकल्पिक उपस्थिति की प्रणाली

2.3 प्रशासनिक संरचना

2.4 तोकुगावा अर्थव्यवस्था

2.5 तोकुगावा की बौद्धिक धाराएँ

2.6 तोकुगावा जापान में संस्कृति

2.7 विदेशी सम्पर्क का विनियमन

2.8 तोकुगावा का पतन

2.9 तोकुगावा अर्थव्यवस्था : प्रोटो औद्योगीकरण का मामला?

2.10 अकाल, संकट और किसान प्रतिरोध

2.11 बदलता बौद्धिक परिवेश

2.12 सारांश

2.13 शब्दावली

2.14 बोध प्रश्नों के उत्तर

2.0 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद, आप निम्नलिखित के बारे में समझ सकेंगे :

- तोकुगावा सामंतवाद की प्रकृति और इसकी प्रशासनिक व्यवस्था,
- तोकुगावा शासन के तहत अर्थव्यवस्था और संस्कृति की प्रकृति,
- तोकुगावा शासन के पतन के कारण, और
- तोकुगावा शासन के अंतिम चरण में आर्थिक, राजनीतिक और बौद्धिक वातावरण में परिवर्तन।

2.1 प्रस्तावना

तोकुगावा शांति जो उत्कृष्ट रूप से उस पर आधारित थी जिसे 'केंद्रीयकृत सामंतवाद' कहा गया है। इसने 1600 के दशक से 19वीं शताब्दी के प्रारंभ तक आर्थिक विकास और जनसंख्या विस्तार, 12-18 मिलियन से लगभग 30 मिलियन, के लिए आधार तैयार किया। राजनैतिक व्यवस्था केंद्र सरकार और हान या शासन क्षेत्रों के बीच शक्ति का एक संतुलन

थी। देश विदेशियों के लिए बंद था और देश के भीतर भी, लोगों की गति को नियंत्रित किया गया था और समाज सैद्धांतिक रूप से ओहदा आधारित समूहों में विभाजित था।

वास्तव में, तोकुगावा काल की हमारी वर्तमान समझ यह है कि यह एक जीवंत समय था जब देश का बाहरी दुनिया के साथ सम्पर्क था, व्यापार और वाणिज्य विकसित हो रहे थे, व्यापारियों ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई क्योंकि अंतर्क्षेत्रीय व्यापार और विशेषज्ञता के साथ बाज़ार के लिए उत्पादन में वृद्धि हुई। राजनैतिक स्थायित्व ने नगरीकरण और आर्थिक विकास को बढ़ावा दिया, साक्षरता का प्रसार हुआ जिससे सरकार प्रशासकों की नियुक्ति करने में पद और ओहदे की बजाए अधिकाधिक योग्यता पर निर्भर होने लगती है। इन विकासों ने एक जीवंत संस्कृति का समर्थन किया।

2.2 तोकुगावा दाइम्यो-हान प्रणाली

तोकुगावा इयेसा ने जो व्यवस्था लागू की उसे 'बाकु-हान' व्यवस्था कहा जाता है। इसका संबंध 'बाकुफू' या केंद्रीय सरकार और 'हान' या सामंती जागीर से है। इस राजनैतिक ढाँचे में एक ऐसी व्यवस्था को कायम किया गया जो तोकुगावा की केंद्रीय सरकार और अर्ध-स्वायत्तशासी सामंती जागीरों के बीच संतुलन पर निर्भर थी। हान की स्वायत्तता को एक हद तक अनुमति दी गयी थी, इसकी सीमा पर विद्वानों द्वारा बहस की जाती है, लेकिन विनियामक तंत्र ने उन्हें केंद्रीय नियंत्रण में रखा। दाइम्यों या जागीरों के स्वामियों को विभिन्न तरीकों से नियंत्रित किया जाता था, उन्हें तोकुगावा परियोजनाओं में शामिल किया गया जिससे उनके संसाधन इस्तेमाल हो जाते थे और उन्हें विवाहों और किलों के निर्माण के नियमों द्वारा संचालित किया जाता था। जिस हद तक उन्हें तोकुगावा द्वारा नियंत्रण किया गया और जिस हद तक दाइम्यों को स्वायत्तता थी, उसकी सीमा अभी भी बहस का विषय है। कुछ विद्वानों ने यह भी तर्क दिया कि दाइम्यों काफी स्वतंत्र थे जबकि कुछ अन्य मज़बूत क्षेत्रीय सम्बंधों का उद्‌भव देखते हैं, जो दाइम्यों की जागीरों से ऊपर उठकर, मेजी अवधि में एक राष्ट्र-निर्माण राज्य का आधार रखते हैं।

तोकुगावा इयासु ने, अपने पूर्वाधिकारी की तुलना में, सम्राट से 'सेईताई शोगुन' (बर्बर दमनकारी सेनापति) की उपाधि ली, लेकिन उनकी तरह ही उन्होंने पूर्ण नियंत्रण का प्रयोग किया। वास्तव में, उन्होंने शाही घराने को नियंत्रित किया। उपाधियाँ स्वयं में कोई सत्ता नहीं देती थी बल्कि सम्राट की प्रतीकात्मकता सत्ता को बनाए रखा गया। प्रत्येक ओहदे के समूहों के लिए, शाही घराने, अभिजात्य वर्ग, समुराई, किसान वर्ग और व्यापारियों के लिए नियम निर्धारित किये गये थे। भिक्षुओं और मंदिरों को भी विनियमित किया गया। बहिष्कृत लोगों के एक छोटे समूह को भी कुछ क्षेत्रों तक सीमित रखा गया था और उसके निवासी प्रतिबंधित थे।

तोकुगावा घराने ने अपने स्वयं के क्षेत्रों पर प्रत्यक्ष शक्ति का इस्तेमाल किया, जो चार मिलियन कोकू से अधिक थी। (एक कोकू लगभग 150 किलो चावल का था जिसे एक वर्ष के लिए एक आदमी को खिलाने के लिए पर्याप्त माना जाता था। एक क्षेत्र की उत्पादकता और राजस्व की गणना चावल के रूप में होती थी। दाइम्यों के पास अपनी जागीर के आकार के आधार पर दस हजार कोकू या उससे अधिक का वार्षिक राजस्व था), लेकिन यह लगभग एक-चौथाई उपलब्ध भूमि थी और उन्होंने प्रत्यक्ष रूप से ओसाका और नागासाकी जैसे प्रमुख शहरों के साथ-साथ तांबे और चाँदी की खानों का भी नियंत्रण किया। उनके प्रत्यक्ष अनुचर बैनर मेन और घरेलू सेवक, जैसा कि उन्हें वर्गीकृत किया गया था, सैन्य सेवा के लिए उत्तरदायी थे लेकिन वह प्रशासन को भी संचालित करते थे।

सरकार ने निरक्षकों (मेत्सुके) की नियुक्तियाँ की, जो दाइम्यों पर गुप्त रूप से नज़र रखते थे और उनकी गतिविधियों की खबर देते थे।

2.2.1 दाइम्यों की श्रेणियाँ

दाइम्यों को तीन श्रेणियों में विभाजित किया गया था : शिनपान या रक्त संबंधी, वफादार जागीरदार (फुदाई), और जिन्होंने तोकुगावा का विरोध किया था और उन्हें कम वफादार माना जाता था। वे बाहर के जागीरदार (तोजामा) थे। शिनपान या रक्त संबंधियों ने केवल दस प्रतिशत भूमि को नियंत्रित किया लेकिन उन्हें क्योतो, ओवारी (वर्तमान नागोया) कियाई (वाकायामा) और ईचीजेन (फूकुई) जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में रखा गया। फुदाई या वफादार जागीरदारों को 26% भूमि दी गई और उन्हें रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण पदों पर रखा गया, और तोकुगावा घराने के साथ वाले जागीरदारों के साथ उनकी संख्या 'तोजामा' दाइम्यों से अधिक थी। बाहरी जागीरदार या कम वफादार सहयोगियों ने 38 प्रतिशत भूमि को नियंत्रित किया। इस जटिल संतुलन ने दाइम्यों को उच्च स्तर की स्वायत्तता प्रदान की, लेकिन उनके लिए विरोध में एक साथ आना मुश्किल बना दिया।

दाइम्यों तोकुगावा के प्रति शपथबद्ध थे, लेकिन 1600-1650 के बीच प्रारंभिक वर्षों में अनेक जागीरों का हस्तानांतरण हुआ, विशेष रूप से बाहरी दाइम्यों की जागीरों का ताकि शोगुन की सत्ता को रेखांकित किया जा सके और भूमि पर उनका अधिकार स्थापित रहे। इस प्रकार सेवाओं के इनाम के तौर पर, 172 नये दाइम्यों बनाए गए और 281 अवसरों पर दाइम्यों को स्थानांतरित किया गया। इस स्थानांतरण नीति ने दाइम्यों और प्रांत के लोगों के बीच सम्बंधों को कमज़ोर करने की मदद की। सत्रहवीं शताब्दी के दौरान 200 से अधिक दाइम्यों ने विभिन्न अपराधों के लिए अपनी भूमि का एक हिस्सा या सभी क्षेत्र गवाँ दिया।

2.2.2 वैकल्पिक उपस्थिति की प्रणाली

'संकिन कोताई' या वैकल्पिक उपस्थिति की व्यवस्था दाइम्यों को नियंत्रित करने का एक और तरीका था। इस आवश्यकता को 1635 में तीसरे शोगुन इमित्सु ने औपचारिक रूप दिया जो तीसरे सैन्य गवर्नर थे। इस व्यवस्था के तहत दाइम्यों के लिए कुछ अवधि तक राजधानी ईदो (आज का टोकियो) में रहना आवश्यक था। जब दाइम्यों राजधानी से दूर या बाहर रहते थे और उस दौरान उन्हें अपने परिवार को बंधक के रूप में छोड़ना होता था। इधर-उधर की यात्रा के लिए भारी खर्च होता था क्योंकि अपनी श्रेणी के अनुसार दाइम्यों 15-300 अपने अनुचरों के साथ यात्रा करते थे। उन्होंने निर्दिष्ट मार्गों का अनुसरण किया और इससे सड़कों, छात्रवासों, मंदिरों और व्यवसायों का विकास हुआ ताकि लोगों की इस गति को मदद मिल सके। यात्रा पर एक विशाल और आकर्षक साहित्य भी विकसित हुआ।

2.3 प्रशासनिक संरचना

प्रशासन के नियमितीकरण ने धीरे-धीरे शोगुन की शक्ति को कमज़ोर कर दिया जिनको कभी-कभी उनके प्रशासनिक अधिकारियों ने प्रभावहीन कर दिया। शोगुनों ने प्रारंभिक दौर में शक्ति का इस्तेमाल किया लेकिन धीरे-धीरे 1666 से यह सत्ता प्रशासनिक प्रमुखों के पास चली गई – पहले महाप्रबंधक (ग्रैंड चैंबलेन) और बाद में मुख्य पार्षदों के पास। यह ओहदे की बजाए योग्यता के बढ़ते महत्व और एक अधिकाधिक जटिल आर्थिक व्यवस्था के प्रबंधन के लिए एक प्रशिक्षित नौकरशाही की आवश्यकता का प्रतिबिंब था। ये अधिकारी मध्यम और छोटी जागीरदारी के शासकों में से थे जबकि बड़े जागीरदारों को पदों से बाहर

रखा गया। जो घराने तोकुगावा घराने को वारिस दे सकते थे उन्हें भी पदों से बाहर रखा गया। अधिकारियों को समवर्ती नियुक्तियाँ दी जाती थी और उन्हें अधिकारियों के बीच अदला-बदला जाता था और इसलिए एक ही कार्य को विभिन्न अधिकारियों द्वारा किया जाता था। सभी नीतिगत मामलों में सलाह ली जाती थी और उनके लिए संयुक्त सहमति आवश्यक होती थी। इस प्रणाली ने तोकुगावा शासन का विरोध के समेकन को रोकने के लिए एक प्रभावी निरीक्षण और संतुलन की प्रणाली के रूप में काम किया और यह सुनिश्चित किया कि सुलह और सहमति सरकार के महत्वपूर्ण साधन थे।

प्रशासन की दृष्टि से तोकुगावा प्रणाली एक स्तर पर राष्ट्रीय सरकार थी और दूसरे स्तर पर एक बड़ी दाइम्यों की सरकार। शीर्ष पर शोगुन ने दोनों कार्यों की देखरेख की। इसके लम्बे समय तक सत्ता का केंद्र बदला और कभी-कभी महत्वपूर्ण पदों पर काम करते हुए कुछ व्यक्ति शक्तिशाली बन गए जैसे कि तमुना ओकितसुगू (1719-1788) या मत्सुदैरा सदानोबा (1758-1829)। तोकुगावा ने सत्ता के प्रमुख प्रभाव उत्पन्न करने वाले साधनों को नियंत्रित किया जैसे सशस्त्र बल तटीय रक्षा और प्रमुख शहरी केंद्रों के साथ-साथ सोने और चाँदी की खानों को भी। इस प्रणाली ने लगभग ढाई शताब्दियों तक शांति और स्थिरता प्रदान की।

बोध प्रश्न 1

1) दाइम्यो-हान प्रणाली की मुख्य विशेषताओं की चर्चा कीजिए।

....

....

....

....

....

2) दाइम्यों की विभिन्न श्रेणियाँ क्या थी?

....

....

....

....

....

....

3) संक्षेप में संकिन-कोताई की प्रणाली का वर्णन करें।

....

....

....

....

....

....

2.4 तोकुगावा अर्थव्यवस्था

तोकुगावा अर्थव्यवस्था जहाँ मुख्यतः ग्रामीण थी लेकिन वह कई महत्वपूर्ण तरीकों से यह बदल गई। शांति और समृद्धि साथ ही साथ किले बंद शहरों में समुराई के संक्रेंद्रण से किसी प्रकार के औद्योगीकरण होने से पहले, उच्च स्तर के नगरीकरण का जन्म हुआ। अठाहरवीं सदी के अंत तक राजधानी इदो की आबादी लगभग दस लाख थी, जो इसे दुनिया के सबसे बड़े शहरों में से एक बनाती थी। पूर्व औद्योगिकी यूरोप की तुलना में जापान में अनेक प्रमुख शहरी केंद्र थे।

शहरों में बढ़ती माँग के कारण शिल्पकारों और दुकानदारों को ओसाका, क्योतो और कनाजवा, सेंदाई, कागोशिमा जैसे किलेबंद शहरों की ओर पलायन करना पड़ा, जिनकी आबादी पचास हजार से अधिक थी। सड़कों के विकास, जैसे तोकाईड़ो (पूर्वी समुद्री सड़क), नाकासेंड़ो (पर्वत के मध्य की सड़क), सान्योड़ो (पर्वतों की धूप वाली तरफ की सड़क) और सानिंड़ो (पर्वत की छाव वाली तरफ की सड़क) ने वाणिज्य और संचार में सुधार किया।

नगरीकरण और नगर संस्कृति

उभरने वाली शहरी संस्कृति बुनियादी तौर पर व्यापारियों के नेतृत्व वाला आंदोलन था। व्यापारियों (शोनिन) को वैसे तो दूसरे पर निर्भर रहने वाले या परजीवियों के रूप में नीची निगाह से देखा जाता था, लेकिन वे ही जापान के पहले उद्यमी थे। वे कठिन परिश्रम करते थे और उन्होंने एक जीवंत सामाजिक व्यवस्था को विकसित करने में योगदान दिया। उदाहरण के तौर पर 1627 में, एक मित्सुई तोशित्सुगू ने ईचिगाया के नाम से इदो में एक वस्त्र की दुकान खोली जो बढ़ते-बढ़ते आज मित्सुकूशी के नाम से मित्सूई कंपनी के स्वामित्व में विकसित हुई।

तोकुगावा समाज इसके इससे पहले के चरित्र-चित्रण से कहीं अधिक जटिल था। जिसमें इसे समुराई-किसान-कारीगर-व्यापारी (शिनोकोशो) से बने होने का सुझाव मिलता है। कूगे या कुलीन वर्ग एक छोटा वर्ग था जो क्योतो तक सीमित था, योद्धाजन (समुराई या बूशी), लगभग चार लाख, अधिकतर शहरों में रहते थे। उन्हें वंशानुगत पेंशन मिलती थी, लेकिन अनेक गरीब परिस्थितियों में रहते थे और खेती या शिक्षण, या कोई अन्य पेशा अपनाते थे। व्यापारियों की समृद्धि बढ़ी जबकि कारीगर मुख्यतः बड़े शहरी केंद्रों में थे और या तो सब रोज़गार वाले थे या दाइम्यों और धनी संरक्षकों के लिए काम कर रहे थे। किसानों का सबसे बड़ा वर्ग वास्तव में एक बहुत विविधता वाला समूह था जिसमें धनी जमींदारों से लेकर, जो शिक्षित और अक्सर उपरोज़गार में शामिल थे, गरीब ओर निरक्षर श्रमिकों तक के लोग आते थे।

शहरीकरण के कारण शहरी केंद्रों में एक पूरे वर्ग के लोगों को वृद्धि को जन्म दिया जो आधिकारिक समाज से बाहर थे – दुकान में काम करने वाले, दिहाड़ी मज़दूर, घरेलू नौकर और बहिष्कृत समूह, जिन्हें चर्चा में अक्सर अनदेखा किया जाता है। वहाँ ऐसे लोगों की संख्या बढ़ रही थी जो आवारागर्द, शहरी गरीब के रूप में वर्गीकृत किये गये थे। समाज के हाशिए पर सबसे नीचे के मनुष्य थे– एटा, जो तथाकथित अशुद्ध व्यवसायों में लगे हुए थे, हिनिन या गैर-लोगों का समूह, जिन्हें अपराधों के लिए दंडित किया गया था और जो एक समयावधि के बाद ही दुबारा समाज में शामिल हो सकते थे। इसमें मनोरंजन करने वाले, कहानी सुनाने वाले और वेश्याएँ थी। तोकुगावा समाज ने वेश्यावृत्ति को एक नैतिक समस्या के रूप में नहीं बल्कि एक प्रबंधन के रूप में देखा। लाइसेंस प्राप्त क्षेत्रों में इसकी

अनुमति दी गई थी, जैसे इदो में, योशिवारा और क्योतो में शिमवारा। गिसा विशेष रूप से अकाल के समय में आसानी से खरीदे जाती थी और एक सीमित और कठिन जीवन जीती थी, लेकिन कुछ अपनी सुंदरता और उपलब्धियों के कारण धनवान बन सकती थी और यहाँ तक कि प्रसिद्धि भी पा सकती थी। समाज सुझाए गये सामान्य विभाजन की तुलना में अधिक जटिल था।

ग्रामीण संकट और शहरी गरीबों की वृद्धि ने सवाल उठाया कि गरीबी से कैसे निपटा जाए? शोगुनेत द्वारा प्रत्यक्ष शासित शहरों में सत्रहवीं शताब्दी के मध्य में राहत आश्रय स्थापित किये गये। इनसे अस्थायी मदद मिली और उसके बाद लोगों को उनके गाँव में वापिस भेजा गया। सत्रहवीं और अठाहरवीं सदी के उत्तरार्द्ध तक, ग्रामीण संकट के कारण निम्न वर्ग में वृद्धि हुई और ये स्थायी सुविधाएँ बन गई।

अठाहरवीं शताब्दी के अंत में इदो में एक प्रकार की कार्यशाला शुरू की गई थी जिसका उद्देश्य बिना अपराधी पृष्ठभूमि वाले लोगों की मदद करना था ताकि वे नये कौशल सीख सकें और लाभकारी रूप से रोज़गार पा सकें। यह प्रतिक्रिया अकाल के साथ-साथ शहरी दंगों को देखते हुए भी हुई थी। कार्यशाला के निवासियों को व्यवहारिक नैतिकता का एक कोर्स भी दिया गया था ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि उन्हें अपने जीवन को विकसित करने के लिए उचित नैतिक आधार प्राप्त है। इसके साथ ही आपात स्थिति के दौरान अस्थाई राहत प्रदान करने के लिए और साथ ही वृद्ध, बच्चों और बिना रिश्तेदार बीमार लोगों की मदद के लिए एक कोष बनाया गया था।

मदद प्रदान करने के पैमाने का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि 1805 में इदो में एक हजार में से चार शहरवासियों को मदद मिली। यह राहत प्रणाली एक विशेषकर के द्वारा और धनी व्यापारियों द्वारा प्रबंधित की गई थी। यह शोगुन के परोपकार की तुलना में, उन गाँवों में प्रचलित उपायों की तुलना में जो विशिष्ट आपात स्थितियों से निपटने के लिए किये गये थे, अधिक सार्वजनिक और निरंतरता वाली राहत प्रणाली थी।

2.5 तोकुगावा की बौद्धिक धाराएँ

आमतौर पर यह कहा जाता है कि इयासु अपनी सैन्य शक्तियों के माध्यम से शासक बन गया, लेकिन कन्फ्यूशियसवादी विचारों का इस्तेमाल करके उसने सरकार चलाई। कन्फ्यूशियसवादी विचारों से लोग प्रारंभिक समय से अवगत थे, लेकिन तोकुगावा काल के दौरान उन्होंने सरकार के लिए, अर्थव्यवस्था के लिए, पारिवारिक सम्बंधों और नैतिकता के लिए नियम प्रदान किए। ये विचार नव-कन्फ्यूशियसवादी मतों से आए जो बारहवीं शताब्दी में चीन में बौद्ध धर्म को चुनौती देने के लिए उभरे। झू-शी (1130-1200) के नव-कन्फ्यूशियसवादी विचारों को जापान में पहली बार एक जैन भिक्षु फूजीवारा सिका (1561-1617) द्वारा पेश किया गया था और हयाशी रजान (1583-1657) द्वारा एक मत की स्थापना करके औपचारिक रूप से एक आकार दिया गया था। उन्होंने अपनी पाठशाला शोहिको (कन्फ्यूशियस के जन्म स्थान के नाम चांगपिंग जिसे जापानी भाषा में शोही उच्चारित किया जाता है) में स्थापित किया जो 1797 से नव-कन्फ्यूशियसवादी विचारों की शिक्षा का अधिकारिक प्रायोजित केंद्र बन गया।

बौद्ध धर्म को शक्ति से नियंत्रित किया गया और सम्प्रदायों में दूरी बनाए रखी गई। मंदिरों के रिकार्ड में जन्म दर्ज किये जाते थे, इसलिए एक सम्प्रदाय से सम्बंध रखने वाले लोगों के अंतिम संस्कार बौद्ध अनुष्ठानों के अनुसार किए जाते थे। बौद्ध मंदिर समृद्ध थे लेकिन उनकी शक्ति सीमित थी। शिंतो सम्प्रदायों ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कुछ लोगों ने

तर्क दिया कि बौद्ध देवता शिंतो देवताओं की अभिव्यक्ति थे। इयासु को शिंतो और बौद्ध देवताओं की अभिव्यक्ति के रूप में गौरवान्वित किया गया था।

कुछ अन्य प्रभावशाली विचारक थे जैसे कि प्राचीन शिक्षा का मत (कोगाकु)। इन विद्वानों ने बल देकर कहा कि मौलिक रचनाओं का अध्ययन किया जाना चाहिए, न कि टीकाओं का जैसा कि सामान्य अभ्यास था।

इस अवधि के सबसे महत्वपूर्ण विचारकों में से एक, ओग्यु सोरई इस मत से जुड़े हुए थे, लेकिन इससे इस मामले में अलग थे कि उन्होंने धर्म वैधानिक ग्रंथों की श्रेष्ठता पर भी सवाल उठाया और तर्क दिया कि इन ग्रंथों को नई परिस्थितियों के अनुसार लागू किया जाना चाहिए। दूसरे शब्दों में, ये प्रकृति के अपरिवर्तनीय सिद्धांत नहीं थे बल्कि एक 'खोज' (सकुई) थे और इसका अर्थ शाब्दिक रूप में नहीं लिया जा सकता था बल्कि बदलते समय को ध्यान में रखते हुए लागू किया जाना चाहिए था।

पूर्व आधुनिक जापान के इतिहास में ईसाई धर्म भी एक महत्वपूर्ण हिस्सा था। इसे सोलहवीं शताब्दी में पुर्तगालियों द्वारा लाया गया था और सत्रहवीं शताब्दी के शुरुआती दिनों में लगभग तीन लाख धर्मांतरित ईसाई थे, जिनमें सत्तारूढ़ घरानों के लोग भी थे। इसे 1620 और 1630 के दशक में दबा दिया गया था और कई तरह के राजनीतिक कारणों से इसे प्रतिबंधित कर दिया गया था। इस प्रतिबंध के साथ ही विदेशी ज्ञान के प्रवेश पर काफी हद तक अंकुश लगा दिया गया, अठारहवीं शताब्दी तक देश में प्रवेश करने वाली सभी पुस्तकों पर कड़ी सेंसर व्यवस्था लागू कर दी गई थी।

2.6 तोकुगावा जापान में संस्कृति

संस्कृति के बारे में सोचने का एक तरीका इसे लोकप्रिय और कुलीन संस्कृतियों के रूप में देखने का है। जापानी विद्वानों जैसे नाकानो मित्सुतोशी ने दरबारी संस्कृति या आभिजात्य वर्ग की संस्कृति (गा या मियाबियाका) के रूप में पहचान की है जो काफी हद तक चीनी शास्त्रीय ग्रंथों से प्रभावित थी। यह शास्त्रीय काव्य जैसे वाका या जुड़ा हुआ पद, रेंगा, नोह नाटक, कानो स्कूल की चित्रकलाओं और चाय समारोह जैसे रूपों में रही होगी। जोकू या 'अपरिष्कृत' (इयाशी) सामान्य जन की संस्कृति थी। इसका सबसे अच्छा प्रतिनिधित्व 'यूकियो' या 'चलाएमान दुनिया' की संस्कृति द्वारा किया जाता था। 'चलाएमान दुनिया' उत्तर भारत में तवायफों की तरह ही गीसा या गणिकाओं, मनोरंजन करने वालों की दुनिया थी, जिन्हें साहित्यिक और संगीत कलाओं में प्रशिक्षित किया गया था और वे धनी लोगों का मनोरंजन करते थे। वे लाइसेंस प्राप्त क्षेत्रों तक ही सीमित थी, जहाँ तलवारों और हथियारों की अनुमति नहीं थी, और जहाँ सामाजिक महत्ता मायने नहीं रखती थी केवल पैसा मायने रखता था। लेखक इहारा साइकाकू (1649-1693) ने शानदार ढंग से गणिकाओं की दुनिया का चित्रण किया है जहाँ पुरुषों ने आनंद के लिए अपने भाग्य लुटा दिये। चलाएमान दुनिया की गणिकाओं के वर्णन को वुड ब्लाक छापाखाना, काबुकी थियेटर और हाइकाई या हास्य कविता में दर्शाया गया था। तोकुगावा कला और साहित्य के कुछ सबसे प्रतिष्ठित उत्पादन जेनरोकु काल (1688-1704) के दौरान हुए।

शहरीकरण और आर्थिक समृद्धि के विकास ने साक्षरता में वृद्धि की और एक बड़े पढ़ाई-लिखाई करने वाली जनता का निर्माण किया जिसने एक जीवंत प्रकाशन उद्योग को बनाए रखा। जापान में छपाई का एक लंबा इतिहास है, वास्तव में, सबसे पुराना मुद्रित ग्रंथ 764-770 के बीच का है। तोकुगावा संस्कृति की जीवंतता एक परिष्कृत मुद्रण उद्योग द्वारा बनाए रखी गई और संरक्षित रही। प्रिंट संस्कृति पश्चिम देशों की तरह ही जटिल और विविध थी।

प्रत्येक वर्ष लगभग 3000 नये शीर्षक प्रकाशित होते थे। इसमें चीनी और बौद्ध ग्रंथों के नियमित पुनर्मुद्रण शामिल नहीं हैं। अपने शिखर पर देशभर में फैले हुए 6,747 प्रकाशन घर थे। शास्त्रीय बोध ओर कन्फ्यूशियसवादी ग्रंथों और जापानी इतिहास के साथ-साथ नाटक, काव्य और कथा साहित्य और पढ़ने-लिखने के लिए वर्णमालाएँ और इसके साथ-साथ एकल पत्र में प्रमुख सूमा-पहलवानों, दरबारियों और अभिनेताओं को दिखाने वाली एक शृंखला भी शामिल थी।

रंगमंच सभी वर्गों में लोकप्रिय था। काबुकी (इस शब्द का अर्थ है झुकना या संदेहास्पद दृष्टि से देखना, निहित अनादर को दिखाना) नाटकों में पहले महिला अभिनेता ही भूमिका निभाती थी। इन नाटकों ने एक विविध सामाजिक भीड़ को आकर्षित किया और उन्हें उकसाने वाले और सामाजिक मापदंडों की अवज्ञा करने वाले रूप में देखा गया। 1642 में अधिकारियों ने उन पर शिकंजा कसा और महिला अभिनेताओं पर प्रतिबंध लगा दिये। काबुकी ने तब महिलाओं की भूमिका निभाने वाले पुरुषों की भूमिकाएँ विकसित की और यह ओसाका जैसे शहरों में समृद्ध व्यापारियों द्वारा संरक्षित एक जीवंत नाटकीय रूप बन गया। समुराई को भाग लेने से प्रतिबंधित कर दिया गया था लेकिन अनेक समुराई छद्म वेश में जाते थे।

दृश्य कलाओं में चलाएमान दुनिया के चित्रों का विकास शायद तोकुगावा काल की सबसे प्रमुख विशिष्टता है। यूकियो चेरी ब्लॉक के ब्लॉकों पर नक्काशीदार वुड ब्लॉक प्रिंट थे, प्रत्येक ब्लॉक एक रंग के लिए उपयोग किया जाता था। अठाहरवीं शताब्दी के बहुरंगी प्रिंटों द्वारा, कभी-कभी एकल शीट और कभी प्रिंट की एक शृंखला में, भू-दृश्य, प्रसिद्ध अभिनेताओं, गणिकाओं पुस्तक चित्रण का उत्पादन किया जा रहा था। एक बहुत प्रसिद्ध हीरोशिगे की तोकाईड़ो हाइवे पर त्रेपन चरण (1833-34) की कृति है।

2.7 विदेशी सम्पर्क का विनियमन

अंग्रेज़ी में रोनाल्ड़ टोबी जैसे विद्वानों की रचनाओं ने जापान की तस्वीर एक बंद देश के रूप में बदल दी है और यह अब ज्यादा परिष्कृत हो गई है। जापान ने 1630 के दशक में विदेशवाद विरोध के कारण सम्पर्कों को सीमित नहीं किया था और न इसलिए कि वे व्यापार नहीं करना चाहते थे, बल्कि यह इसलिए किया गया क्योंकि वे चीन केंद्रित विश्व व्यवस्था में अधीनस्थ स्थिति में नहीं रहना चाहते थे। सत्रहवीं शताब्दी की शुरुआत में विदेश व्यापार पर प्रतिबंध लगा दिए गये थे क्योंकि रेशम के आयात के लिए चाँदी के निर्यात से चाँदी की खदानों का ह्रास हुआ था और इससे एक मुद्रा संकट पैदा हो गया था। इस प्रवाह को रोकने के लिए तोकुगावा ने आयात को सीमित करने और घरेलू रेशम उत्पादन को मदद करने के लिए उपाय किये। इन उपायों ने रेशम उत्पादन (सेरी कल्चर) और उच्च्य गुणवत्ता वाले रेशम की शुरुआत की। क्योतो रेशम उत्पादन के प्रमुख केंद्रों में से एक के रूप में उभरा। जैसे यह घरेलू उत्पादन बढ़ा वैसे ही विदेशी व्यापार में गिरावट आई, जब तक कि 1859 में बंदरगाहों को विदेशी व्यापार के लिए खोला नहीं गया।

देशिमा में डच व्यापारिक अड्डा

डच व्यापारियों को देशिमा में एक छोटे व्यापारिक अड्डे से नागासाकी से अपना व्यापार करने की अनुमति मिल गई थी और अठाहरवीं शताब्दी में उन्होंने पुस्तकों का आयात करना भी शुरु कर दिया था। कुछ जापानी विद्वान जो डच लोगों के लिए दुभाषिए बने उन्होंने डच भाषा का अध्ययन किया और उन्हें डच विद्वान या रंगाकुशा के नाम से जाना जाने लगा। उन्होंने पश्चिमी चिकित्सा, विज्ञान और गणित की पुस्तकों का अध्ययन और अनुवाद किया

और इस नये ज्ञान का प्रसार किया। उनके इस कार्य ने ज्ञान के स्रोत के रूप में चीन की बजाए पश्चिम जगत पर ध्यान केंद्रित किया गया। 1771 में डच विद्वान सुगिता गेनपाकु (1733-1817) ने मानव शरीर के विच्छेदन में भाग लिया तो उन्होंने महसूस किया पश्चिमी पुस्तकों ने मानव शरीर की कार्यप्रणाली को सटीक रूप से दिखाया है और चीनी चिकित्सा के पास देने को कुछ भी नहीं है। उनके अनुवादों ने इन विचारों को आम जनता तक पहुँचाया। अन्य विद्वानों ने जैसे होंडा तोशियाकी (1744-1821) ने आर्थिक विकास और विदेशी विस्तार की वकालत की और काइहो सीरियो (1755-1817) ने सरकार से व्यापार और वाणिज्य में संलग्न होने का आग्रह किया। ये विचार अनेक पश्चिमी रचनाओं को पढ़ने और पश्चिमी समाजों के अध्ययन से लिए गए थे।

अठारहवीं शताब्दी के अंत में विदेशवाद-विरोध महत्वपूर्ण हो गया। जापान ने विदेशों के साथ विभिन्न सम्बंध रखे। कोरिया ने नियमित रूप से राजनयिक प्रतिनिधि मंडल भेजे और जापान ने चीन के साथ व्यापार किया। पुस्तकें व्यापार का महत्वपूर्ण घटक थी और यह व्यापार में आए जहाजों के कप्तानों द्वारा दी गई जानकारी के आधार पर बनाए गए वर्णनों के साथ वैश्विक विकास के बारे में जानकारी का एक महत्वपूर्ण स्रोत बन गई। उदाहरण के लिए, जापान को उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में ब्रिटिश द्वारा भारत के औपनिवेशीकरण के बारे में पता चला। भारत औपनिवेशीकरण के खतरों का एक प्रभावशाली उदाहरण बन गया। इसी तरह, होकाइड़ो और ओकिनावा जैसे द्वीपों के बारे में विद्वानों के काम ने जापान की सीमाओं और इन परिधि के क्षेत्रों और मुख्य द्वीपों के बीच पूर्व-आधुनिक सम्बंधों के बारे में सवाल उठाए हैं।

2.8 तोकुगावा का पतन

तोकुगावा व्यवस्था के पतन की जड़े उस अंतर्विरोध में थी जो सत्रहवीं शताब्दी में इसके बनने के समय इसके ढाँचे में निहित था। यह अंतर्विरोध एक सरल कृषि व्यवस्था पर आधारित पदानुक्रमता के स्तरों में विभाजित समाज की कल्पना करने वाले आदर्श और एक कहीं अधिक जटिल वाणिज्यिक अर्थव्यवस्था की वास्तविकता और सामाजिकता के बीच था। शांतिपूर्ण विकास के एक लम्बे दौर ने जो बदलाव किये उन्होंने ऐसी सामाजिक और बौद्धिक शक्तियों को जन्म दिया जिन्होंने तोकुगावा शासन के आधार पर सवाल उठाए और उसे दुर्बल किया। नकदी अर्थव्यवस्था और शिल्प उद्योगों के विकास ने वाणिज्यीकरण में वृद्धि की और नई तकनीकों के प्रसार को जन्म दिया जैसे कि बेहतर बीज, रोपण तकनीक, उत्पादन बढ़ाने के लिए उर्वरकों का अधिक उपयोग।

सम्पदा के नये स्रोतों को सफलतापूर्वक संभालने में तोकुगावा बाकुफू की असमर्थता के कारण एक अत्यधिक स्थिर कर आधार और अर्थव्यवस्था के वाणिज्यिक हो जाने का परिणाम यह हुआ कि शोगुन और दाइम्यों और उनके समुराई अनुचरों के लिए भी वित्तीय समस्याएँ खड़ी हो गई। उदाहरण के लिए, 1830 में सत्सुमा के राज्य पर इसके वार्षिक राजस्व का 33 गुना ऋण था और 1840 तक चोशु पर उसके वार्षिक राजस्व का 23 गुना ऋण हो चुका था। इस वित्तीय गिरावट का असर समुराई पर पड़ा जिनकी आमदनी सत्रहवीं शताब्दी में भी बहुत कम थी और जिनके सामने बढ़ती कीमतों और अपनी माँगों को पूरा करने की समस्या थी।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था का चरित्र तेजी से बदल रहा था और उन्नीसवीं शताब्दी के आते-आते क्षेत्रीय विशेषज्ञता कई किस्म की आर्थिक गतिविधियों को जन्म दे चुकी थी। मध्य और दक्षिण होंशु में वाणिज्यिक गतिविधि का अधिक प्रसार हो गया था और अनेक गाँव कपास,

तिलहन आदि उगाने के विशेषज्ञ हो गए थे। इदो के आसपास के क्षेत्र में अब कोई एक-चौथाई ग्रामीण आबादी वाणिज्य और दस्तकारी के क्षेत्र में कार्यरत थी। शहर कपड़े, लाख और मृदभांडों के उत्पादन के केंद्र थे। लेकिन इनके ग्रामीण क्षेत्रों में जाने के साथ शहर वाणिज्यिक और प्रशासनिक केंद्र बन गये और उनमें ग्रामीण क्षेत्रों से अनाधिकृत लोगों का आना जारी रहा।

सुधारों की विफलता

बाकुफू ने इन समस्याओं से निपटने के लिए विभिन्न कदम उठाए थे, लेकिन उनके सुधार के प्रयास समस्या की प्रकृति को समझ नहीं पाए। 1705 में बाकुफू ने अमीर और शक्तिशाली योदोया जैसे सौदागरों की सम्पदा को जब्त कर लिया था। लेकिन इससे कोई लाभ नहीं हुआ। 1720 के दशक में तोकुगावा योशिमुने (1684-1757) ने वित्तीय और प्रशासनिक व्यवस्था को सुधारने के लिए कदम उठाए जिसमें उसने सौदागरों को लाइसेंस (व्यापार की औपचारिक अनुमति) दे दिए, लेकिन उसने उपभोग और धन वितरण को कम करने के परम्परागत नुस्खे का भी इस्तेमाल किया।

एकमात्र प्रयास जो काफी हद तक अलग था उसे बाकुफू के अधिकारी तामुना ओकितशुगु (1719-1788) ने किया था। उसने वाणिज्य को बढ़ावा देने और उस पर कर लगाकर सरकारी राजस्व बढ़ाने के प्रयास किये, लेकिन ये प्रयास सफल नहीं हुए और उसे उसके पद से हटा दिया गया। उसके उत्तराधिकारी मत्सुदैरा सदानोबु (1758-1788) ने योशिगुने द्वारा उठाए गए कदमों को दोहराने का प्रयास किया और 1841 में मिजुनो तादाकुनि ने तो सरकारी अनुमोदन वाले व्यापार अधिकारों को समाप्त कर दिया। इन उपायों ने पहले से गंभीर स्थिति को बस जटिल करने और गड़बड़ाने का ही काम किया और उन्हें वापस लेना पड़ा।

एक ओर तो प्रभावी और उपयुक्त नीतियों को लागू करने में बाकुफू की असमर्थता थी और दूसरी ओर उत्पादकों और स्थानीय सौदागरों के बीच अनाधिकृत व्यापार में बढ़ोत्तरी हो रही थी। राज्य अपनी स्वयं की वित्तीय कठिनाइयों से उभरने के लिए इस व्यापार को स्वीकार करने या उसमें सक्रिय सहयोग करने के लिए भी बाध्य था। उदाहरण के लिए, चोशु में 1840 में कुल गैर-कृषि आय शुद्ध-कृषि आय के समान थी, लेकिन कृषि आय पर तो 39 प्रतिशत कर लगाया गया था जबकि गैर-कृषि आय पर केवल दस प्रतिशत लगाया गया। 1840 तक होंशु और शिकोकु के क्षेत्रों में ग्रामीणों को एक नकदी अर्थव्यवस्था से दृढ़ता से जोड़ा जा चुका था।

2.9 तोकुगावा अर्थव्यवस्था : प्रोटो औद्योगीकरण का मामला?

वर्तमान विद्वता 'प्रोटो औद्योगीकरण' की अवधारणा का उपयोग करती है, जो यह देखती है कि कृषि का वाणिज्यीकरण किसानों को कुटीर उद्योगों के माध्यम से वस्तुओं का उत्पादन करने और उन्हें दूर-दराज के बाज़ारों में बेचने के लिए कैसे ले जाता है। यह अठारहवीं शताब्दी के मध्य से जापान में होता है। यह कैसे हुआ, यह विवादित है। क्रेन विगान ने दिखाया है कि मध्य जापान में शिमोइना घाटी के किसानों ने बाज़ार के लिए वस्त्र, मज़बूत लकड़ी के उत्पाद और कागज़ शिल्पों का उत्पादन शुरू किया। डेविड हावेल ने तर्क दिया है कि होक्काइड़ो के अध्ययनों में प्रोटो औद्योगीकरण कृषि के वाणिज्यीकरण से जुड़ा होने की बजाय वास्तव में उन क्षेत्रों में विकसित हुआ जहाँ कृषि-उत्पादकता होक्काइड़ो की तरह कम थी। यहाँ ओसाका क्षेत्र में मछली के उर्वरक की आपूर्ति से मत्स्य उद्योग बढ़ गया और मत्स्य उद्योग में जिस प्रकार व्यापार व्यवस्थित किया जाता था, उसमें भी बदलाव आया—

यह एक अनुबंध आधारित प्रणाली से अधिक पूँजीगत हो गया, जिसमें अमीर व्यापारी श्रमजीवी श्रम को नियंत्रित करते थे। इसी तरह अन्य क्षेत्रों में धनी किसानों (गोनो) ने उभरना शुरू किया क्योंकि उन्होंने साहूकारों के रूप में, सेक (चावल से बनी एक किस्म की मदिरा) या चाय का उत्पादन करके, और अन्तर्क्षेत्रीय व्यापार में भागीदारी करके धन अर्जित किया।

प्रमुख शहरों का विकास हुआ, किसानों ने बाज़ार के लिए उत्पादन किया और अन्तर्क्षेत्रीय व्यापार का विस्तार हुआ। इन वाणिज्यिक विकासों से पिछड़ जाने की बजाय या उन्हें न समझने की बजाय अधिकारियों ने इस ग्रामीण उत्पादन को प्रोत्साहन देने और उस पर कर लगाने के लिए अपनी नीतियों को बदलना शुरू कर दिया। मिसाल के तौर पर सुसन हैनली का तर्क है कि भौतिक जीवन बेहतर हुआ : घर पहले से बड़े थे, लोगों को बेहतर खाना मिलने लगा और लोग लम्बे समय तक, यहाँ तक कि तोकुगावा जापान में पश्चिमी मानकों के अनुसार भी जीवित रहने लगे।

तोसा के हान पर हुए अध्ययनों में यह तर्क दिया गया है कि व्यापारियों ने कोकुएकी, 'देश या प्रदेश की समृद्धि' का विचार विकसित किया था। सार्वजनिक अधिकारियों ने इस विचार को अपनी सोच में शामिल किया और वाणिज्यिक गतिविधियों जैसे अण्डे, चीनी, कागज उत्पादन और बारुद के उत्पादन को समर्थन देने के लिए नीतियों का निर्माण किया। उन्होंने व्यापारियों को इन क्षेत्रों में जाने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए निश्चित समयावधि के लिए करों को कम करने या हटा देने का काम किया।

2.10 अकाल, संकट और किसान प्रतिरोध

इन विकासों का दूसरा पक्ष यह था कि 1730, 1780 और 1830 के दशकों में तीन बड़े अकाल पड़े, जिसके कारण सैकड़ों, हजारों लोगों की मृत्यु हुई, जो किसानों के अनिश्चित जीवन का संकेत देती है। ग्रामीण समाज के स्तरीकरण और विकास के असमान लाभ भी ग्रामीण प्रतिरोध और किसान विद्रोह के रूप में परिलक्षित होते हैं जो तोकुगावा काल के बाद के भाग में ग्रामीण अमीरों के खिलाफ निर्देशित थे। किसान विद्रोह और उनके इर्द-गिर्द का समृद्ध साहित्य उन विभिन्न तरीकों को रेखांकित करता है जिनसे लोगों को आर्थिक विकास में लाभ मिला।

नकदी व्यवस्था का विकास होने और उसके परिणामस्वरूप सामाजिक सम्बंधों में होने वाले बदलाव ने तनावों और द्वंद्वों को जन्म दिया। समुराई के भीतर विभाजनों के कारण, निचले और ऊपरी के बीच सामाजिक स्थिति के अंतर के कारण, उनके बीच सामुदायिक हितों की स्थिति नहीं बन सकी। व्यापारी भी एक समरूप समूह नहीं थे बल्कि हितों के अनुसार विभाजित थे। बाकुफू के कृष्णापात्र ओसाका के व्यापारियों का तोकुगावा के ढाँचे से निकटता का सम्बंध था और जब इसका पतन हुआ तो वे भी समाप्त हो गये। बस एक मित्सुई घराना अपने संस्थापक की दूरदर्शिता के कारण बचा। क्योंकि उन्होंने हमेशा यह माना था कि उन्हें हमेशा एक आरक्षित कोष को बचाए रखना चाहिए।

जिन ग्रामीण व्यापारियों ने एक गतिशील भूमिका निभानी शुरू कर दी थी, उन्हें विशेषाधिकारों के लाभ नहीं दिए गये और उनकी बदलाव की आवश्यकता के प्रति प्रतिक्रिया अनुकूल रही। शहरों की तरह ग्रामीण क्षेत्रों में भी आर्थिक बदलावों ने सामाजिक संरचना को गड़बड़ा दिया और अव्यवस्था की स्थितियाँ बारम्बार और अधिकाधिक हिसंक होने लगी।

किसान वर्ग पर तोकुगावा शांति सख्ती के साथ लागू की गई और 1637 में शिमाबारा के विद्रोह को बुरी तरह कुचल दिया गया था। 1780 और 1830 के दशक में अकाल, मूल्यवृद्धि

और अत्यधिक कराधान के कारण किसान प्रतिरोधों का जन्म हुआ। बीच के वर्षों में इन प्रतिरोधों ने सामूहिक निवेदनों से बढ़कर हिंसक कार्यवाहियों का रूप ले लिया। ये प्रतिरोध अनेक गाँव में फैल गये और इनमें हजारों लोगों ने भाग लिया।

विद्वानों की गणना के अनुसार, सत्रहवीं शताब्दी में किसान विद्रोहों का औसत एक या दो प्रतिवर्ष था जबकि 1790 के बाद उनका औसत प्रतिवर्ष छः से ऊपर पहुँच गया था। शुरुआत की किसानों की कार्यवाहियाँ ग्रामीण एकजुटता के रूप में और व्यापाक तौर पर शांतिपूर्ण थी और उनका सम्बंध करों में कटौती करवाने से था। लेकिन बाद के वर्षों में वे अक्सर गाँव के बुजुर्गों की सलाह के खिलाफ हुई। ये किसान कार्यवाहियाँ अक्सर हिंसक थीं और उनमें अक्सर सम्पत्ति को नष्ट किया गया। कई बार किसानों के प्रतिरोध का चरित्र सहस्त्राब्दिक रहा। इस तरह के उदाहरण के लिए शहरी केंद्रों में भी प्रतिरोध तोकुगावा के अंतिम वर्षों में बढ़ गए। इनमें से सबसे प्रतिनिधि विरोधों को योनाओशी (विश्व-नवनीकरण) कहा गया। इन प्रतिरोधों की प्रेरणा लोक परम्पराओं से ली गई और उनका उद्देश्य नीति-परायणता की फिर से स्थापना करना था। ग्रामीण अशांति आर्थिक बदलावों की भी देन थी और बढ़ती शिक्षा और जागरूकता की देन भी।

2.11 बदलता बौद्धिक परिवेश

अठारहवीं सदी के अंत और उन्नीसवीं सदी की शुरुआत ने पूर्वी-एशियाई वातावरण में परिवर्तन ला दिया। अब जापानी, चीन और दक्षिण-पूर्व एशिया में पश्चिमी शक्तियों के बढ़ते हस्तक्षेप से अवगत थे।

अधिक प्रभावशाली विचारों में से एक नेशनल स्कूल ऑफ लर्निंग से आया, जिसका प्रभाव आधुनिक काल में जारी रहा। मोतुरी नोरीनागा (1730-1801) इस मत के प्रमुख प्रतिनिधियों में से एक हैं। उन्होंने कोजिकी (712) ग्रंथ का अध्ययन किया जो जापान की दिव्य उत्पत्ति और इसके शाही राजवंश के बारे में वर्णन करती है। उन्होंने कम्फ्यूशियस के विचारों के खिलाफ तर्क देते हुए यह दावा पेश किया कि शिंतों (देवताओं का मार्ग) जापानी सभ्यता का आधार था। सूर्य देवी के प्रत्यक्ष वंश के रूप में सम्राट ने जापानी सभ्यता की श्रेष्ठता और चीन से इसके अंतर को चिह्नित किया। ये विचार हिराता अत्सुताने (1776-1843) द्वारा और विकसित किये गये और उन्होंने आधुनिक जापान में रूढ़िवादी राष्ट्रवाद के लिए आधार प्रदान किया।

पुस्तकों और नाटकों के अनुवादों ने औपनिवेशीकरण के खतरों को जापानी लोगों के समक्ष रखा। वेइ युआन, एक प्रभावशाली चीनी विद्वान की एक पुस्तक का अक्सर अनुवादित अनुभाग पश्चिम से कैसे लड़ा जाए उसमें भारत के औपनिवेशीकरण पर उनका अध्याय था। जापान में कई बार इसका अनुवाद किया गया और भारत एक 'खोये हुए देश' का एक उदाहरण बन गया।

प्रचलित राजनैतिक व्यवस्था के खिलाफ कुछ अन्य आलोचनात्मक स्वर थे। कुछ ने अतीत की तरफ दृष्टिपात किया और सम्राट के चारों ओर बने पुराने शाही राज्य को पुनर्जीवित करने को कहा, जबकि अन्य लोगों ने समुराई के शासन करने के अधिकार की वैधता पर सवाल उठाए।

शाही संस्था से प्रेरित वफादारी के आदर्शों ने जापानी संस्कृति की शुद्धता को पुनर्स्थापित करने और कई बार इन मूल अवधारणाओं में पश्चिमी प्रौद्योगिकी को शामिल करके अधिक प्रभावशाली और मज़बूत करने का समर्थन अन्य बौद्धिक धाराओं द्वारा किया गया। मितो मत (स्कूल) के इर्द-गिर्द ऐतिहासिक विद्वता के विकास ने एक अध्ययन, *द हिस्ट्री ऑफ ग्रेट*

जापान (दाइ निहोन शि) को प्रायोजित करके एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और इसने जापान के सम्राट के लिए प्रमुख स्थिति में होने पर बल दिया। ऐसे समय में जब तोकुगावा शासन पर सवाल उठाया जा रहा था, यह शाही शासन की वापसी का आह्वान करने वाले शाही वफादारों के लिए एक महत्वपूर्ण बौद्धिक समर्थन बन गया।

आलोचनात्मक स्वरों के बीच, शायद तोकुगावा शासन के आधार की सबसे व्यापक आलोचनाएँ एंडो शोएकी (1703-1762) की थी, जो प्रशिक्षण से एक चिकित्सक थे, जिन्होंने बीमार लोगों की ज़रूरतों के बारे में सोचने से परे जाकर इसके बारे में सोचा कि समाज की रुग्णता क्यों थी? आर्थिक और राजनैतिक फूट के प्रति उनकी प्रतिक्रिया ने उन्हें सामंती समाज की कड़ी आलोचना करने के लिए प्रेरित किया और वह न केवल समुराई शासन को अस्वीकृत करते हैं बल्कि नव-कन्फ्यूशियसवादी और बौद्धों की मूलभूत शिक्षाओं की भी आलोचना करते हैं।

एंडो शोएकी ने लिखा 'सभी जन एक व्यक्ति हैं' और सच्ची स्वायत्तता और स्वतंत्रता को वास्तविक बनाने के लिए उन्होंने प्रकृति का एक पारिस्थितिक दर्शन पेश किया। शोएकी की प्रमुख उत्तरजीवी रचना, 'द वे ऑफ द ऑपरेशन ऑफ द सेल्फ-एक्टिंग ट्रूथ' (शिजेन शिन इ डो) पर काम 1750 में शुरू हुआ था और यह अक्तूबर 1752 में प्रकाशित हुई थी। शोएकी ने विश्व के नियम (हो ना यो) परिभाषित किए। जहाँ लोगों को गुलामी में रखा गया था और इस दुनिया के विरोध में उन्होंने प्रकृति की दुनिया को पेश किया जहाँ लेखन (युक्ति) ने मनुष्यों को प्रकृति (वाणी) से अलग नहीं किया था। यह वर्चस्व उन्होंने तर्क दिया तीन तरीके से बनाकर रखा गया था, सैन्य बल के माध्यम से, आर्थिक विनिमय के माध्यम से यानी सोने-चाँदी के माध्यम से और समान रूप से महत्वपूर्ण विचार या शब्दों के माध्यम से।

शोएकी के लेखन को केवल 1899 में खोजा गया था लेकिन यह आधुनिक विद्वानों के लिए विभिन्न तरीकों से तोकुगावा व्यवस्था की आलोचना के बारे में सोचने के लिए एक महत्वपूर्ण मूल पाठ बन गया।

अन्य विचारक जो समुराई वर्ग के आलोचक थे, उन्होंने व्यापारिक वर्ग के महत्व पर जोर दिया जिन्हें परम्परागत रूप से हेय दृष्टि से देखा जाता था। ऐसे एक व्यक्ति थे ईशिदा बेगान (1685-1744)। उनके विचारों ने पारम्परिक कन्फ्यूशियसवादी और बौद्ध अवधारणाओं से ग्रहण कर यह विचार आगे बढ़ाया कि 'हृदय से सीखो', जिसने यह सिखाया कि अपनी सोच को ब्रह्माण्ड के साथ कैसे एक सीध में रखना है। इस अवधि के दौरान उनके शिष्यों ने उनकी शिक्षाओं का विकास और प्रसार किया। उन्होंने बौद्धिक आभिजात्य वर्ग से नहीं बल्कि सामान्य लोगों से वार्तालाप किया। उन्होंने 1800 से लगभग 200 स्कूलों की स्थापना की और न केवल वयस्क पुरुषों के लिए बल्कि महिलाओं और बच्चों के लिए भी एक सुविचारित शिक्षण कार्यक्रम विकसित किया था। इन शिक्षाओं को बाकुफू द्वारा समर्थन दिया गया था क्योंकि उनका उद्देश्य राजनैतिक व्यवस्था को पलटना नहीं था।

ग्रामीण संकट और किसान विद्रोहों की समस्याओं ने इस तरह के विचारों को प्रेरित किया कि गरीबी को कैसे कम किया जाए और कट्टरपंथी विरोध को कैसे कम किया जाए। निनोमिया सोंतोकू (1787-1856) समृद्ध कृषक परिवार से आने वाले दार्शनिकों में सबसे प्रमुख थे जिन्होंने स्व-सहायता की वकालत की। उन्होंने और उनके जैसे अनेक सुधारकों ने संतानोचित पुण्यशीलता और परिश्रम के कन्फ्यूशियसवादी विचारों का प्रचार किया लेकिन उनकी दृष्टि में सामाजिक व्यवस्था स्थिर नहीं थी। उन्होंने तर्क दिया कि कड़ी मेहनत करके गरीब किसान, मितव्ययी होकर और नयी कृषि विधियों का उपयोग करके उत्पादकता में सुधार करके अपनी तकदीर बदल सकते थे और अमीर बन सकते थे।

पश्चिम से विचारों के सम्पर्क में आने से, अठारहवीं शताब्दी के अंतिम भाग में बौद्धिक अन्वेषण भी प्रभावित हुए। हालांकि बाकुफू इसके लिए एकजुट नहीं था कि नयी चुनौतियों को समझने के लिए क्या नीति अपनाई जाए। डच विद्वानों की विशेषज्ञता का उपयोग करते हुए बाकुफू ने पश्चिमी पुस्तकों का अध्ययन करने के लिए एक स्कूल की स्थापना की और 1857 तक यह **इंस्टीट्यूट फॉर द इन्वेस्टीगेशन ऑफ बारबेरियन बुक्स** बन गया था। बहुत से डच विद्वान चीन और एशिया के अन्य भागों में पश्चिम देशों की गतिविधियों से अवगत थे और उन्होंने सुधार उपायों की वकालत की, विशेषकर तोकुगावा की सैन्य क्षमताओं को विदेशी खतरे का सामना करने के लिए उसमें सुधार। उदाहरण के लिए, 1784 की शुरुआत में ही हयाशी शिही (1738-1793) ने व्यापक सैन्य सुधार की वकालत करते हुए एक समुद्री राष्ट्र की सैन्य समस्याओं की चर्चा करते हुए एक पुस्तक प्रकाशित की।

पश्चिम की चुनौती का सामना करने के बारे में एक अधिक प्रभावशाली विचार आईजावा सीशिसाई द्वारा 'न्यू थिसिस' में व्यक्त किया गया था (शिनरॉन 1825), आईजावा (1781-1863), उत्तर में रुसियों के आगे बढ़ने के बारे में जानते हुए समझ गये कि पश्चिम खतरे का मुकाबला करने वाली रणनीति को सैन्य शक्ति के साथ-साथ एक एक सांस्कृतिक पुनरुत्थान की भी आवश्यकता थी। पश्चिम ने ईसाई धर्म और अनिवार्य सैन्य सेवा का इस्तेमाल किया था इसलिए जापान को अपने हथियारों का आधुनिकीकरण करते हुए अपने कोकुताई राष्ट्रीय सार को पुनर्जीवित करना चाहिए। उन्होंने लिखा ''सूर्य हमारी दिव्य भूमि में उगता है : और आदिकालीन ऊर्जा की उत्पत्ति यहाँ हुई है। महान सूर्य के उत्तराधिकारियों ने प्राचीन काल से शाही सिंहासन पर कब्ज़ा कर रखा है।'' आईजावा इस प्रकार पश्चिम खतरों से उत्पन्न चुनौतियों से सामना करने के लिए और एक नये कार्यक्रम को आगे बढ़ाने के लिए विभिन्न परम्पराओं से ग्रहण कर रहे थे और वह जापान और जापानी मूल्यों की प्रमुखता को पुनः विकसित करने के लिए पश्चिम ज्ञान का उपयोग कर रहे थे।

सकुमा शोजन (1798-1866) एक अन्य प्रभावशाली विद्वान थे, जिन्होंने तोपखाने और अन्य पश्चिम विषयों का अध्ययन किया था, उन्होंने 'पूर्वी नैतिकता और पश्चिम विज्ञान' का नारा गढ़ा। यह लोगों के लिए इस नये ज्ञान के कुछ क्षेत्रों को स्वीकार करने का एक महत्वपूर्ण तरीका बन गया, जैसे कि चिकित्सा में, जहाँ चेचक से निपटने के लिए टीकाकरण की प्रभावकारिता स्पष्ट थी।

अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दी में प्रचलित नये विचारों के घटकों में यह जागरूकता थी कि राज्य को एक नया और मज़बूत जापान बनाने के लिए प्रशासनिक, उद्यमशीलता और सैन्य कौशल को जोड़ना होगा। यह भी सुझाव दिया गया था कि शाही संस्था का प्रमुख महत्व है।

बोध प्रश्न 2

1) तोकुगावा के तहत अर्थव्यवस्था की प्रकृति की संक्षेप में चर्चा कीजिए।

....

....

....

....

....

2) क्या तोकुगावा अर्थव्यवस्था प्रोटो-औद्योगीकरण के एक मामले का प्रतिनिधित्व करती है?

....

....

....

....

....

3) तोकुगावा शासन के अंत में बौद्धिक वातावरण में हो रहे परिवर्तनों का विश्लेषण कीजिए।

....

....

....

....

....

2.12 सारांश

बाकुफू की राजनैतिक आलोचना तब बढ़ी जब ये प्रवृत्तियाँ एकजुट हुईं। बाकुफू पश्चिमी शक्तियों के साथ सामना करने की समस्या से निपटने में असमर्थ था, जो यह माँग कर रही थी कि जापान उनके व्यापार और राजनैयिक सम्बंधों स्वतंत्र छूट प्रदान करे। बाकुफु ने इन पश्चिमी शक्तियों से कैसे निपटने की कोशिश की इसका वर्णन इकाई तीन में मेजी पुनर्स्थापना में किया जाएगा।

लम्बे तोकुगावा शासन ने देश में बड़े पैमाने पर एक ग्रामीण अर्थव्यवस्था और पारम्परिक रूप से सामाजिक स्थितियों में विभाजित समाज को इस तरह के असाधारण परिवर्तनों के रूप में देखा, जहाँ कृषि के वाणिज्यीकरण से एक बड़ी शहरी आबादी का भरण-पोषण हो सकता था। अर्थव्यवस्था और प्रशासन में कुशल जनशक्ति की माँग के कारण शिक्षा का प्रसार हुआ और सामाजिक गतिशीलता को प्रोत्साहन मिला। देश की सामाजिक और बौद्धिक जीवन शक्ति ने इसे पश्चिमी साम्राज्यवाद के खतरे से उत्पन्न नई चुनौतियों और उनके साथ लाए गए नये विचारों का प्रतिउत्तर देने की अनुमति दी। तोकुगावा शासकों ने चुनौतियों का सामना करने के असफल प्रयास किये। अंततः जागीरों का एक गठबंधन अपेक्षाकृत शान्तिपूर्ण परिवर्तन करने में कामयाब रहा क्योंकि उन्होंने सम्राट के शासन की बहाली करने का दावा किया था। पश्चिम के आगमन और 1868 के मेजी पुनर्स्थापना से उत्पन्न चुनौती अगली इकाई की विषयवस्तु होगी।

2.13 शब्दावली

बाकुफू : तोकुगावा शासन के तहत सैन्य कमांडर के वर्चस्व वाली केंद्रीय सरकार।

बाकु-हान : केंद्रीय सरकार और दाइम्यों के अधिकार क्षेत्रों के बीच शक्तियों का विभाजन।

दाइम्यों : तोकुगावा शासन के तहत सामंती भू-स्वामी।

हिनिन : तोकुगावा जापान में सामाजिक रूप से बहिष्कृत सामाजिक समूह।

कोकु : राजस्व या कर की एक इकाई जिसकी गणना वस्तु के रूप में होती थी (एक कोकु 150 किलो चावल के समतुल्य होता था)।

प्रोटो-औद्योगीकरण : दूर के बाज़ारों में बिक्री के लिए शिल्प तकनीकों के तहत वस्तुओं का उत्पादन।

संकिन कोताई : दाइम्यों को नियंत्रित करने के लिए तोकुगावा जापान में उनके लिए वैकल्पिक उपस्थिति की प्रणाली।

2.14 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) भाग 2.2 देखें।

2) उपभाग 2.2.1 देखें।

3) उपभाग 2.2.2 देखें।

बोध प्रश्न 2

1) भाग 2.4 देखें।

2) भाग 2.9 देखें।

3) भाग 2.11 देखें।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY